Indian J. Soc & Pol. 03(02): 2016: 103-106 **ISSN 2348-0084 (P)**
ISSN 2455-2127 (O)

सरदार पटेल के राजनीतिक विचारों की प्रासंगिकता

प्रताप बहादुर पटेल[1]
[1]अतिथि प्रवक्ता (राजनीति विज्ञान विभाग), श्यामा प्रसाद मुखर्जी राजकीय महाविद्यालय, फाफामऊ, इलाहाबाद, उ0प्र0, भारत

ABSTRACT

एक कुशल राजनीतिज्ञ होने के कारण सरदार पटेल को मालूम था कि किसी भी राष्ट्र के निमार्ण काल में त्याग की आवश्यकता हो तो त्याग अवश्य करना चाहिये। उनके लिए व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर राष्ट्र हित था। पटेल राष्ट्रीय हित के प्रबल प्रहरी थे, राष्ट्रीयता उनके जीवन का परम लक्ष्य था, अतएव राष्ट्रहित में गाँधी जी के कहने पर प्रधानमंत्री जैसा महत्वपूर्ण पद जवाहर लाल नेहरू के लिए छोड़ दिया। सरदार पटेल में राष्ट्र प्रेम कूट–कूट कर भरा था एक बार गृह मंत्री के रूप में उन्होंने कहा था कि–जो भारतीय है वे भारत में ही रहे क्योंकि भारत के लोगों को भारतीयों की जरूरत है चाहे वह किसी भी धर्म और जाति का हो।' एम0एन0 राय के पटेल की मृत्यु के दो दिन पहले लिखा कि वे भारत भाग्य के निर्माता थे। जब भविष्य निराश जनक हो तो, भूत से प्रेरणा लेना होगा, सरदार पटेल इस भूत के गौरव थे। सरदार वल्लभ भाई पटेल का जीवन व आचरण, उनके विचार, उनकी राष्ट्र के प्रति गहन निष्ठा, उनकी कर्मठता व दृढ़ता सब देश के लोगों के लिए अनुकरणीय है। राजगोपालाचारी जैसे नेता ने लिखा है कि हमने सबसे बड़ी भूल यह की कि सरदार पटेल को प्रधानमंत्री नहीं बनाया। यदि प्रधानमंत्री सरदार पटेल बनते और विदेश मंत्री नेहरू बनते तो बहुत अच्छा हुआ होता। जय प्रकाश नारायण जैसे समाजवादी नेता ने कहा कि सरदार पटेल को प्रधानमंत्री न बनाकर हमने बहुत बड़ी भूल की।

KEYWORDS: *सरदार पटेल, राष्ट्रीय आन्दोलन, राष्ट्रीय एकीकरण*

सरदार पटेल को अप्रमाणिकता का भय था पर उद्दामवादी गिने जाने का मोह न था। राजाओं को दिये गये सालियाना के बारे में उद्दामवादियों ने विरोध किया श्री वी0पी0 मेनन के कथानुसार ''अकेले ग्वालियर राज्य की गंगा जली निधि में इतनी रकम थी कि उसके ब्याज से सारे मध्य भारत के राजाओं का सालियाना चुकाया जा सकता था। निजाम ने जो जायदाद सौंपी थी उसके ब्याज की ही आय सवा करोड़ रूपये थी। राजाओं ने भारत सरकार को एकास्सी करोड़ रूपये दिये थे, इतना ही नहीं बल्कि बारह हजार मील की लम्बी रेलवे दी थी। प्रतिवर्ष अपनी निजी खर्च के लिए 20–25 करोड़ खर्च करने वाले राजाओं को कुल मिलाकर पाँच करोड़ देने थे फिर भी सरदार पटेल ने राजाओं को दिये जाने वाला सालियाना नये राजा की नियुक्ति के समय क्रमशः घटता जाय ऐसी व्यवस्था करायी थी।(कृष्णा,1995,पृ516)

उद्दाम वादियों ने जब सालियाना का करार रद्द करने या बदलने का आग्रह किया तब सरदार ने स्पष्ट रूप से कह दिया कि ''स्वराज्य का आरम्भ मैं अप्रमाणिकता से नहीं करना चाहता हूँ''(वही) करार के अनुसार हमने जो उत्तरदायित्व लिया है तथा उन्हें जो विश्वास दिलाया है उसे पेन्शन अदा करके पूरा करना है। इसे पूरा न करने में हमारी निष्फलता और विश्वास भंग गिना जायेगा।''(वही) इस प्रकार सच्चाई, विश्वास और ईमानदारी की सरदार पटेल की राजनीति एक आदर्श है जिससे वर्तमान राज्य की विकृतिया दूर की जा सकती है।

सरदार पटेल बेहद अनुशासन प्रिय तथा दल के प्रति उनकी अटूट निष्ठा थी। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ0 खरे सीधे गर्वनर जनरल से मिलकर कांग्रेस के लिए अपमान जनक आचरण किया था। सरदार ने उनसे पूछा कि ''आपको कांग्रेस को अन्धेरे में रखेकर विदेशी शासन के प्रतिनिधि गर्वनर से गुपचुप तरीके से मिलने का अधिकार किसने दिया। आप कांग्रेस के प्रतिनिधि है, जिसने आपको कुछ शर्तो के साथ मुख्यमंत्री पद पर बिठाया है। अच्छा व्यवहार रखिये नहीं हो हट जाइये'' खरे को जाना पड़ा, उनकी और गर्वनर की चालबाजी कारगर न हुई। उसी मंत्रिमंडल में एक मुस्लिम मंत्री थे। जिसने एक हरिजन बालिका पर अत्याचार करने वाले सजा प्राप्त कैदी को माफी दिलवायी। सरदार ने इसका स्पष्टीकरण मांगते हुए कहा, ऐसे अपराधी को आपने माफी कैसे दिलायी? कांग्रेसी मंत्री होकर अपने यह काम अच्छा नहीं किया। इस स्थान पर आप नहीं रह सकते। उन्होंने आगे कहा कि अपने इस कृत्य के लिए मैं न्यायाधीश नहीं बनूँगा लेकिन निवृत्त न्यायाधीश मन्मथनाथ से आपके मामले की जाँच कराऊँगा। वे जो कहे उसे मानना पड़ेगा। मन्मथनाथ ने जाँच के उपरान्त मंत्री को अधिकार के दुरूपयोग का दोषी पाया फलतः मंत्री को जाना पड़ा। मुस्लिम होने के कारण मुस्लिम लीग ने विरोध किया, उत्पात मचाया पर सरदार दृढ़ रहे सरदार पटेल ने स्पष्ट करते हुए कहा ''वह मंत्री हिन्दू है या मुसलमान, मेरे सामने यह प्रश्न है ही नहीं। सवाल है कि अधिकार के दुरूपयोग का।''

1: Corresponding Author

अनुशासनहीनता की वजह से सरदार पटेल ने नरीमान जैसे कुशल और प्रगतिशील अल्पसंख्यक जाति के नेता नरीमान को भी दल से निष्कासित करने जैसा कठोर निर्णय लिया। सरदार पटेल ने कहा कि, ''मेरा निर्णय गलत या अन्यायी हो, तो मुझे निकाल दीलिये, मुझे एतराज नहीं लेकिन योग्य व्यक्ति उसकी जाँच करें।''(वही पृ 15) गाँधी जी प्रसिद्ध वकील बहादुर जी को अपने साथ रखकर नरीमान एवं उनके समर्थकों को एक सप्ताह तक सुना, उन्होंने फैसला दिया कि सरदार पटेल के विरूद्ध शिकायत निराधार है। यह प्रकरण बड़ा दुःखदायी रहा। लेकिन यह भी स्मरणीय है कि जब तक इसका फैसला न आया तब तक सरदार सेवाग्राम नहीं गये। गाँधी जी ने कहला भेजा पर सरदार गये ही नहीं। महादेव भाई ने बुलावा भेजा तो सरदार ने कहा कि ''मुझे नहीं आना है, यदि मैं आँ जाऊ तो लोग इसका गलत अर्थ निकालेंगे। मुझे तो बम्बई भी नहीं जाना है मेरे मामले की जाँच कराइये। संसदीय बोर्ड के अध्यक्ष की हैसियत से यदि नरीमान के साथ अन्याय किया हूँ तो मैं अयोग्य हूँ।'(वही पृ 57) 1946 ई0 के चुनावों में भी अनुशासन एवं दल के प्रति निष्ठा के गुण को प्रत्याशियों के लिए योग्यता के रूप में रखा।''(मेहरोत्रा एण्ड रंजना,1997,पृ0117) इस प्रकार उच्च जीवन मूल्यों की रक्षा करना ही सरदार का अटल लक्ष्य था जिसके आधार पर ही आज देश की राजनीति को स्थिर बनाया जा सकता है।

भारत की एकता और अखण्डता के साथ–साथ धर्म निरपेक्षता के प्रति भी सरदार पटेल सदैव प्रयत्नशील रहे। वे स्पष्ट वक्ता थे इसलिए कुछ लोगों ने प्रचार किया कि सरदार पटेल मुस्लिम विरोधी है पर यह निराधार है, वे मानते थे कि––''भारत और पाकिस्तान में हिन्दू और मुस्लिम भाईचारे से रह सके ऐसी हवा खड़ी करने की आवश्यकता है। बहुमत के लोगों को अल्पमत के हितों के पहरेगीर बनना है, अल्पमत के हितों की रक्षा का कर्तव्य बहुमत वर्ग के लोगों का है। हिन्दू भारत में मुसलमानों से अधिक है इसलिए हिन्दुओं को मुसलमानों का रक्षण करना है।' जब स्पेशल ट्रेन हिन्दुस्तान से पाकिस्तान जाने लगी, तब अमृतसर के उन सिक्खों ने जो पाकिस्तान से घायल होकर आये थे और जिनके कृटुम्ब के लोगों को वहाँ हत्या कर दी गयी थी, स्पेशल ट्रेन में जाने वालों को काट डालने का निर्णय लिया। उस समय सरदार पटेल जान हथेली पर रखकर अमृतसर पहुँचे और सिक्खों को समझा बुझाकर ट्रेनों को जाने का मार्ग प्रशस्त किया। सरदार ने धर्म निरपेक्षता को राष्ट्र की अखण्डता को ध्यान में रखकर साफ शब्दों में यह कहा कि ''जिसे पाकिस्तान से लगाव हो वह पाकिस्तान चला जाय, पर जिसे भारत में रहना है उसे भारतीय बनकर रहना होगा। पर जो भारत के प्रति वफादार नहीं है वह पाकिस्तान चला जाय।''(सरदार साहित्य माला, 1986 पृ047) यह देश का दुर्भाग्य है कि वह आज सरदार के विचारों को भूल रहा है परिणाम स्वरूप साम्प्रदायिकता हिलोरे मार रही है। यदि राष्ट्र को साम्प्रदायिकता के चुंगल से निकालना है तो सरदार पटेल से प्रेरणा लेकर ही लोगों में राष्ट्र भक्ति की भावना जागृत करके तुष्टीकरण की नीति का त्याग कर, ही इस समस्या का समाधान सम्भव है।

सरदार लोकतंत्र के बड़े पुरस्कर्ता थे। लिये हुए निर्णय को अमल में लाने की क्षमता उनमें थी पर सभी निर्णय वे लोकतंत्रीय ढंग से लेने के हिमायती थे। उदाहरणार्थ कांग्रेस प्रमुख पद के लिए टंडन जी ने उम्मीदवारी की थी वे चुने भी जाते ऐसी परिस्थितियाँ थी। किन्तु जवाहर लाल को यह पसन्द नहीं था, उनकी मान्यता थी कि टंडन जी का झुकाव हिन्दुओं की ओर है जवाहर लाल नेहरू ने लिखा कि ''मैं जिसे प्रतिक्रियावादी झुकाव कहता हूँ वैसे टंडन है।'' सरदार पटेल ने नेहरू जी को समझाते हुए कहा कि कॉंग्रेस का संविधान और कांग्रेस सर्वेसर्वा है। नासिक अधिवेशन में जो प्रस्ताव कांग्रेस मंजूर करेगी वे प्रमुख के लिए बन्धनकारी होंगे यदि वे उन्हें स्वीकार नहीं करेंगे तो उन्हें त्यागपत्र देना पड़ेगा। जो अधिकार कांग्रेस अधिवेशन का है उसे आप क्यों ले रहे हैं। आखिरकार टंडन ही अध्यक्ष चुने गये।

मद्रास के मुख्यंत्री की पसन्दगी के बारे में सरदार पटेल ने लोकमत का सम्मान किया। पंडित जवाहर लाल नेहरू, राजेन्द्र प्रसाद एवं सरदार पटेल तीनों लोग चाहते थे कि मद्रास का उत्तरदायित्व राजाजी सम्भाले, उनकी नजर में राजाजी से योग्य और कुशल कोई दूसरा नहीं था, परन्तु मद्रास कांग्रेस ने टी0 प्रकाशम् को अपना नेता चुना। सरदार पटेल ने लोकतंत्र का सम्मान करते हुए कहा कि ––''मैं मानता हूँ कि कांग्रेस और विधान सभा का हित इसी में है कि आप लोग राजाजी को पसन्द करें फिर भी आप टी0 प्रकाशम् को पसन्द करते हैं तो मैं राजाजी को आपके ऊपर थोपने वाला नहीं हूँ।''(वही पृ068) इसके अलावा कई अनेक ऐसे प्रसंग है जिसमें उन्होंने लोकतन्त्र में विश्वास व्यक्त किया। लोकतंत्र के प्रति सरदार पटेल की अटूट निष्ठा से प्रेरणा लेकर वर्तमान समय में लोकतंत्र को सुदृढ़ बनाया जा सकता है।

सरदार पटेल छोटे–छोटे राज्यों के गठन के खिलाफ थे। दिसम्बर 1949 ई0 में कांग्रेस द्वारा आन्ध्र प्रदेश को भाषायी आधार पर विभाज्य करने संबंधी, पारित प्रस्ताव का विरोध किया। उनका विचार था कि, ''यदि किसी कारण किसी प्रदेश के बड़े आकार में काट–छांट करना जरूरी हो जाय, तो भौगोलिक स्थिति को सम्मुख रखते हुए प्रशासनिक सुविधा और लाभों को ही ध्यान में रखकर किसी प्रदेश की सीमाओं में परिवर्तन करना चाहिए।''(वही,पृ330) दुर्भाग्य से सरदार पटेल के विचारों के विरूद्ध अगले कुछ ही वर्षो में भाषायी आधार पर राज्यों का पुर्नगठन कर क्षेत्रीय वाद को प्रोत्साहन दिया गया। क्षेत्रीयवाद का जो विष देश की एकता में अवरोध बना है उसे निकालने के लिए सरदार पटेल के बताये मार्ग पर ही चलना जरूरी है।

सरदार पटेल ने हमेशा नैतिकता और ईमानदारी की राजनीति की। वे जातिवाद में विश्वास नहीं करते थे। सरदार पटेल

की नैतिकता का सबसे बड़ा प्रमाण नेहरू के संबंध में गाँधी को दिया गया जिसके कारण उन्होंने नेहरू को जीवन भर अपना नेता माना। उनकी ईमानदारी का प्रमाण अपने पुत्र डाह्या भाई को अपने सरकारी निवास में रहने की अनुमति नहीं प्रदान करना तथा अपने पुत्र या पुत्री को राजनैतिक उत्तराधिकारी न घोषित करना है। आर्थिक रूप से कितने ईमानदार थे इसका प्रमाण उनकी मृत्यु के पश्चात् घर से मात्र 287 रू0 की नकद राशि व दो धोती और एक कुर्ता निजी सम्पत्ति के रूप में थी।''(वही) वे कांग्रेस के विभिन्न पदों पर रहते हुए ''प्रदेश कांग्रेस अध्यक्षों को निरन्तर टेलीफोन करते थे लेकिन बिल अपनी जेब से भरते थे। जिसमें उनकी आधे से अधिक आय व्यय हो जाती थी।''(कुमार,1991,पृ13) भ्रष्टाचार की आँधी से अस्थिर राजनीति को नयी राह सरदार के जीवन से मिल सकती है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त जवाहर लाल नेहरू कांग्रेस को पूर्ण स्वराज्य के संकल्प के अनुसार भारत को राष्ट्रमंडल का सदस्य नहीं बनाना चाहते थे लेकिन सरदार पटेल का विचार था कि ''व्यवहारिक कारणों से राष्ट्रमंडल का सदस्य बनना भारत के हित में होगा।''(मेहरोत्रा एण्ड रंजना, 1997,पृ0199) उनके प्रबल समर्थन और यथार्थवादी परामर्श से 27–28 अप्रैल, 1949 ई0 को लंदन में राष्ट्रमंडल देशों के प्रधान मंत्रियों के सम्मेलन में भारत ने प्रभुता सम्पन्न गणराज्य बने रहने के साथ ही अपने व्यापारिक तथा आर्थिक हितों को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रमंडल का सदस्य बनना स्वीकार कर लिया। राष्ट्रमंडल की सदस्यता ग्रहण करने से भारत को न केवल आर्थिक क्षेत्रों में लाभ मिला अपितु विश्व मंत्र पर भारत अपनी व अफ्रीकी देशों की बात प्रभावशाली ढंग से रखने में सफल रहा। वर्तमान समय में भारत राष्ट्रमंडल का एक प्रमुख राष्ट्र है। वर्तमान नेतृत्व सरदार पटेल से प्रेरणा लेकर अपनी अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान हेतु राष्ट्रमंडल का प्रयोग अपने हितों के लिए कर सकता है।

चीन के बारे में पटेल की दूर दृष्टि और समझ नेहरू से कही अधिक परिपक्व व सही थी। नेहरू हिन्दी चीनी भाई–भाई के भ्रम में खोये रहे जब तक कि चीन ने 1962 ई0 में आक्रमण करके उनका भ्रम नहीं तोड़ दिया। जबकि सरदार पटेल ने हमेशा से चीन को एक सम्भावित शत्रु व सीमा पर एक चुनौती के रूप में देखा। 1949 ई0 में जब चीन एक शक्तिशाली एकीकृत राष्ट्र के रूप में उभरा तो सरदार पटेल ने बार–बार नेहरू को सजग किया, भारत को उत्तर पूर्वी सीमा के खतरे के प्रति सावधान होना आवश्यक है।

सरदार पटेल की सूक्ष्म दृष्टि ने चीन की साम्राज्यवादी नीतियों को पहचान लिया। ''जून 1949 ई0 में उन्होंने नेहरू को स्पष्ट लिखा कि तिब्बत में अपनी स्थिति मजबूत करनी होगी, साम्यवादी शक्तियों से दूर रहना होगा। चीन तिब्बत की स्वायत्ता को अवश्य भंग करेगा।''(दास,1977,पृ0139) पटेल ने हमेशा चीन के प्रति सावधान रहने की बात की। उन्होंने सड़क, रेल, वायु सेना, संचार, यातायात द्वारा तिब्बत, भूटान, सिक्किम, दार्जलिंग व आसाम से संबंधों को और निकट जाने की सलाह दी थी। सरदार पटेल भारत और चीन के बीच सम्भावित तनाव के बारे में आशंकित रहे तथा, बार–बार नेहरू को सतर्क किया, अपनी मृत्यु के कुछ समय पहले 7 नवम्बर, 1950 ई0 को नेहरू को पत्र लिखकर चीन से सावधान रहने की बात कही। पर यहाँ भी नेहरू ने उनकी सलाह की उपेक्षा की जिसका खामियाजा देश को 1962 ई0 में भरना पड़ा।

चीन के बारे में सरदार पटेल के विचार आज की प्रासंगिक है, चीन के प्रति सतर्क रहना होगा। एक तरफ तो वह भारत की तरफ दोस्ती का हाथ बढ़ाता है और दिल्ली, मास्को, पेकिंग धुरी बनाने की बात करता है तो दूसरी तरफ भारत की सीमा पर सैनिक जमावड़ा कर देता है। साथ हो भारत के शुत्र पाकिस्तान को भारत के विरूद्ध सैनिक साजों सामान की दृष्टि से मजबूत बनाने का कार्य करता है।

लार्ड माउण्टवेटन ने 1966 ई0 में लिखा कि मैं पटेल को हमेशा एक ऐसे पुरूष के रूप में याद करूंगा जिनमें लौह इच्छा, स्पष्ट दृष्टि, दृढ़ प्रतिज्ञा थी पर हृदय से कोमल, विनम्र और भावना शील रहे।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि सरदार पटेल भविष्य द्रष्टा थे। भारत की राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान के उनके अपने मौलिक विचार थे। व्यापक दृष्टिकोण, दूरदर्शिता समन्वय एवं सन्तुलन और व्यवहारिकता उनके विचारों की मुख्य विशेषता थी। उनकी विचार धारा राष्ट्र की एकता एवं अखण्डता से बंधी थी, जिसमें राष्ट्रहित सर्वोपरि था।

सरदार पटेल बहुमुखी क्रान्तिकारी राजनीतिज्ञ थे। अन्याय का प्रतिकार उनके कर्मो व सिद्धान्तों की बुनियाद रही। वे कर्मयोगी, व्यवहारिक– राजनीतिज्ञ एवं स्पष्टवादी थे। उनमें न केवल राष्ट्र की जटिल समस्याओं को समझने की अपूर्व क्षमता थी वरन राष्ट्र को सही नेतृत्व देने की अपूर्व क्षमता थी। राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय समस्याओं की उनमें गहरी समझ थी और उनके समाधान के बारे में स्पष्ट योजना थी। निष्काम कर्मयोगी, परम राष्ट्रभक्त, निष्ठावान प्रशासक एवं दूरदर्शी राजनेता के रूप में सरदार पटेल ने भारत के नवनिर्माण में अभूतपूर्व योगदान किया। उनका जीवन दर्शन, उनका चरित्र एवं व्यवहार, उनके निर्णय, उनके सुझाव देश के भावी विकास में आज भी उतने ही प्रासंगिक एवं महत्वपूर्ण है।

राष्ट्रीय हित पटेल के लिये सदैव सर्वोपरि रहा। पद या सत्ता का लोभ उनको लेशमात्र विचलित नहीं कर सका। उन्होंने समर्पित, साहसी, सत्याग्रही के रूप में राजनीति में प्रवेश किया

तथा एक सक्षम संगठनकर्ता एवं कुशल प्रशासक के रूप में राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन को सफल नेतृत्व प्रदान किया। अपने निष्पक्ष, भेदभावपूर्ण रहित व्यवहार द्वारा एक स्वच्छ सबल एवं सुदृढ़ प्रशासन की नींव रखी। अन्याय, अनाचार और भ्रष्टाचार का प्रबल विरोध हीं नहीं अपितु उन्मूलन करने का सतत् प्रयास किया। उनकी कार्यप्रणाली, जो कि कार्यकर्ताओं पर विश्वास व सद्भाव पर आधारित थी, आज भी राजनीतिज्ञों एवं प्रशासनिक अधिकारियों के गिरते मनोबल को ऊपर उठाने की दिशा में अनुकरणीय है।

सन्दर्भ

पटेल, बाबू भाई जश भाई का व्याख्यान, उद्धत, *सरदार साहित्य माला* 1986, अहमदावाद, सम्पुट,

पटेल, दिलवार सिंह, जैसवार,(2000) :*नवोदित भारत के निर्माता सरदार पटेल*, दिल्ली,

कृष्णा, बी0 (1995) : *सरदार वल्लभ भाई पटेल इंडियाज आयरनमैन*, नयी दिल्ली,

मेहरोत्रा, एन0सी0, एण्ड रंजना कपूर (1997) : *सरदार वल्लभ भाई पटेल व्यक्ति एवं विचार* , दिल्ली

कुमार, रवीन्द्र,(1991): *सरदार वल्लभ भाई पटेल के सामाजिक एवं राजनीतिक विचार*

दास, दुर्गा, (1977) : *सरदार पटेल और कारेसपोन्डेन्स*, वाल्यूम VIII, अहमदाबाद